बी० ए० भाग - II

प्रथम प्रश्न-पत्र

प्रश्न— अज्ञेय के काव्य की विशेषताएँ बताइये।

उत्तर—

## अज्ञेय के काव्य का भावपक्ष —

अज्ञेय के काव्य में भावों का वैविध्य दर्शनीय है। अज्ञेय प्रयोगवाद और नई कविता के विशिष्ट कवि हैं। अज्ञेय के काव्य की भावगत विशेषताओं को संक्षेप में निम्नलिखित प्रकार से देखा जा सकता है;—

१. पीड़ा-बोध —

अज्ञेय उन प्रयोगवादी कवियों में है जो मध्यवर्ग की पीड़ा को अच्छीतरह पहचानते हैं। आज मध्यवर्ग के सपने और आकांक्षाएँ बड़ी रंगीन हैं। वे लिखते हैं—

दुःख सबको माँजता है,
और
चाहे
सबको मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु
जिनको माँजता है
उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें।

२. दमित काम-वासना — छायावादी कवियों ने कल्पना-लोक में नारी के साथ साहचर्य जोड़कर अपनी पिपासा पूर्ति कर ली थी किन्तु यथार्थ के प्रति आग्रह रखने वाले प्रयोगवादी कवि के लिए

ऐसा करना सम्भव न था। अज्ञेय के काव्य में दमित यौन-वासना को इसप्रकार रूपायित किया गया है —

आह मेरा प्रवास है आप्त
धमनियों में उमड़ आयी है लहू की धार
प्यार है अभिसप्त।

3. अनुभव और प्रामाणिकता —

जिन अनुभवों को कवि ने स्वयं भोगकर प्राप्त किया है व अपनी सच्चाई के कारण सहज ही दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। इसलिए अज्ञेय अनुभव की प्रामाणिकता का महत्व इन स्वरों में उद्घोषित करते हैं —

अच्छा
अपना ठाठ फकीरी
माँगी के सुख साज से
अच्छा सात्विक मौन
व्यर्थ के श्रवण मधुर छन्द से।

(4) मोहभंग और यथार्थ के प्रति आग्रह —

कवि अज्ञेय ने छायावादी कुहासे से निकलकर जब यथार्थ के नये धरातलों की खोज की है। जीवन में सुन्दर-असुन्दर, उदात्त-अनुदात्त, भव्य-तुच्छ आदि का सापेक्षिक महत्व है।

(5) व्यक्तित्व का समाजीकरण —

डॉ० इन्द्रनाथ मदान — "अज्ञेय के सम्बन्ध में कहा जाता है कि इन्होंने अपने काव्य के नये वरण

में व्यक्ति के समाजीकरण पर विशेष बल दिया है और इस प्रवृत्ति को नयी कविता का लक्षण माना गया है।"

(6) विद्रोह भावना —

अज्ञेय के काव्य में विद्रोह से भरे स्वर भी गूँज रहे हैं। उनकी विद्रोह भावना की विशेषता यह है कि एक प्रकार की कोमलता भी उसे आवेष्टित किये हुए है। अज्ञेय की कोमलता स्नात विद्रोह भावना का स्वरूप इन पंक्तियों में देखिए —

सुनो तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान
तुम जो बड़े-बड़े गद्दों पर पर ऊँची दुकानों में

(7) व्यंग्यात्मकता —

अज्ञेय का व्यंग्य संतुलित है। उसमें बौद्धिकता की छाप है एवं आधुनिक सभ्यता की विसंगति और निरर्थकता पर व्यंग है जो प्रायः करुणा का भाव लिए होता है।

(8) प्रकृति-चित्रण —

छायावाद और नयी-कविता के सेतुबन्ध अज्ञेय की कविता में प्रकृति का अनेक रूपों में अंकन हुआ है। उनमें प्रकृति के तटस्थ और निर्लिप्त दृश्य चित्र खींचने की प्रवृत्ति नहीं है।

(9) प्रेमानुभूति —

अज्ञेय के प्रेम ने वासनात्मक एवं प्रतीकात्मक स्वरूप का चित्रण किया है। साथ ही प्रेम के सहज और स्वाभाविक स्वरूप का उद्घाटन भी किया है। प्रेम के वासनात्मक एवं प्रतीकात्मक स्वरूप का चित्रण इन पंक्तियों में देखिए —

उड़ गया वह बावला
कर प्रदर्शित देह की सीमावली को
प्रात: होते।

02/10/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया